Dr. Priti Kumari
Deptt. of Philosophy
Vaishali Mahila
College, Hajipur.

जैन का जीव विचार (Jain theory of Jiva)

जैन दर्शन के प्रवर्तक वर्धमान महावीर माने जाते हैं। महावीर के पहले भी जैन दर्शन के कई विचारक हुए जिन्हे तीर्थंकर कहा जाता है। जैन दर्शन के जीव विचार कुछ इस तरह के है –

जिस सत्ता को अन्य भारतीय दर्शन मे साधारणतया आत्मा कहा गया है। उसी को जैन दर्शन मे 'जीव' की संज्ञा दी गई है वस्तुतः जीव और आत्मा एक ही सत्ता को दो भिन्न भिन्न नाम है।

जैन दर्शन के मतानुसार चेतन द्रव्य को ही जीव कहा जाता है। चैतन्य जीव का मूल लक्षण है। चैतन्य के अभाव मे जीव की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए जीव की परिभाषा इन शब्दों मे दी जाती है 'चेतना लक्षणो जीवः' जैनो का जीव संबंधी यह विचार न्याय-वैशेषिक के आत्म-विचार से भिन्न है न्याय वैशेषिक ने चैतन्य को आत्मा का आगन्तुक लक्षण माना है उनके अनुसार आत्मा स्वभावतः अचेतन है। चैतन्य जीव मे सर्वदा अनुभूति रहने के कारण जीव को प्रकाशमान माना जाता है। वह अपने आप को प्रकाशित करता है जीव की अनेक विशेषतायें है –

(1) जीव ज्ञाता है वह भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है परन्तु स्वयं ज्ञान का विषय कभी नही होता।

(2) जीव कर्ता है। वह सांसारिक कर्मों मे भाग लेता है। वह शुभ और अशुभ कर्म से स्वयं अपने आप भाग्य का निर्माण कर सकता है।

जैन का जीव संबंधी यह विचार सांख्य के आत्मा संबंधी विचार से विरोधात्मक संबंध रखता है।

(3) जीव भोक्ता है। जीव अपने कर्मों का फल स्वयं भोगने के कारण सुख और दुःख की अनुभूतियाँ प्राप्त करता है।

Scanned with CamScanner

जैन के अनुसार जीव स्वभावतः अनन्त है जीव में चार प्रकार की पूर्णताएँ पायी जाती है जिन्हे अनन्त चतुष्टय कहा जाता है ये है - अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति और अनन्त सुख। जब जीव बन्धन ग्रस्त हो जाता है तो उनके ये गुण अभिभूत हो जाते है। जीव की इन विशेषताओ के अतिरिक्त प्रमुख विशेषता यह है कि जीव अमूर्त होने के बावजूद मूर्ति ग्रहण करता है इसलिए जीव को अस्तिकाय द्रव्य के वर्ग मे रखा जाता है। जीव के इस स्वरूप की तुलना प्रकाश से की जाती है जिस तरह प्रकाश का कोई आकार नही होता है।

(4) यदि चैतन्य शरीर का गुण होता तब शारीरिक परिवर्तन के साथ-साथ चैतन्य मे भी परिवर्तन होता है लम्बे और मोटे शरीर मे चेतना की मात्रा अधिक होती और नाटे और दुबले शरीर मे चेतना की मात्रा कम होती। परन्तु ऐसा नही होता है जिससे प्रमाणित होता है कि चेतना शरीर का गुण नही है।

जैन दर्शन के अनुसार सर्वप्रथम जीव के दो प्रकार होते है - बद्ध और मुक्त। मुक्त जीव उन आत्माओ को कहा जाता है। जिन्होने मोक्ष को प्राप्त किया है। बद्ध जीव उसके विपरीत उन आत्माओ को कहा जाता है। जो बंधन-ग्रस्त है। बद्ध जीव का विभाजन फिर भी दो प्रकार के जीवो में किया गया है। वे है - 'स्थावर' और 'त्रस'। स्थावर जीव गतिहीन जीवो को कहा जाता है ये जीव पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि और वनस्पति मे निवास करते है। इनके पास सिर्फ एक ही ज्ञानेन्द्रिय है- स्पर्श की। इसलिए उन्हे एकेन्द्रिय जीव भी कहा जाता है। त्रस जीव वे है जो गतिशील है। ये निरन्तर विश्व मे भटकते रहते है। त्रस जीव भी विभिन्न प्रकार के होते है।

Scanned with CamScanner